महाराष्ट्र के उपे क्षित समु दायो ं के लो कनाट्य

डॉ. शशिकांत सोनवणे 'सावन'
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, प्रताप महाविद्यालय, अमलने र (महाराष
ट्र)

प्र ास्ताविक :

जीवन की व्यापकता एवं गहराईयो ं को अभिव्यक्त करता लो कनाट्य लो कसाहित्य की महत्वपु र्ण विधा है । इस मे ं जीवन के विभिन्न रं गो ं की सहज—सु ंदर झाकियॉ दिखाई दे ती है ं । लम्बे समय के विशाल जीवन की अने काने क अनु भूतियॉ लो कनाट्य के द्वारा दर्शक, पाठक एव श्रो ताओ ं को हो ती है । यथार्थ के साथ कल्पकता के रं गो मे ं डूबो ता लो कनाट्य, सहृद्‌यो ं के लिए किसी रं गो त्सव से कम नही है । महाराष्ट्र मे ं लो कनाट्य की समृद्ध परम्परा रही है । इस लो को त्सव के बीज महाराष्ट्र की प्र ाचीन मीट्‌टी मे ं पाये जाते है ं । महाराष्ट्र के उपे क्षित समु दायो ं ने लो कनाट्यो ं को साकार कर, लो करं जन एवं लो कउद्‌बो धन का कार्य किया है ं ।

उद्दे श्य :

- महाराष्ट्र मे ं लो कनाट्य का उद्‌गम
- महाराष्ट्रीयन लो कनाट्य स्वरुप
- महाराष्ट्र के उपे क्षित समु दायो ं के लो कनाट्यकार
- महाराष्ट्र के उपे क्षित समु दायो ं के जलसे
- महाराष्ट्र की लो कनाट्य कला एवं कलाकार : निष्कर्ष

शो ध पद्‌धति :

- सं बं धित समु दायो ं से साक्षात्कार
- शो धगं ्रथो ं का आधार

महाराष्ट्र मे ं लो कनाट्य का उद्‌गम :—

लो कनाट्य स्वयं अपने आपमे ं एक प्र ाचीन कला है , जो व्यक्ति औ र समाज के भीतर नानाविध रुपो ं मे ं स्थानापन्न है । प्र सं गानु सार एवं समयानु रुप इसकी अभिव्यक्ति हो ती रही है । ऐ तिहासिक दस्तावे ज एवं व्यापक जनाधार के अनु सार महाराष्ट्र मे ं इसका उद्‌गम इ.स. सत्रहॅवी शति के आसपास माना जाता है ं । मु गल सम्र ाट औ रं गजे ब के समय मे ं महाराष्ट्र मे ं लो कनाट्य का बीजां कु रण हु आ है । यह एक ऐ तिहासीक सत्य माना जाता है कि छावणियो ं मे ं रहने वाले तत्कालिन मु गल सिपाहियो ं के रं जन के लिए लो कनाट्य का प्र यो ग हो ने लगा था। उस समय लो कनाट्य 'तमाशा' के रुप मे ं प्र चलित था। जिनमे ं विशे षत: हिजडे , बां दियॉ एवं नर्तक छो रो द्‌वारा मनो रं जन ेकिया जाता। औ रं गजे ब के पश्चात दे श के तख्त पर हु कु मत करने वाले अधिकतर मु गल सल्तनतकारी तमाशा के प्र ति आकर्षित रहे ं । महाराष्ट्र मे ं शिवाजी राजा भो सले के समय मे ं तमाशाभिव्यक्ति के प्र माण प्र ाप्त हो ते है । शिवाजी राजा रयत अर्थात जनता के राजा थे ं । उनकी प्र जा गरिबं एवं अधिकतर निम्नवर्गिय थी। तमाशा निम्नवर्गियो ं की दे न है ं । अॅ ग्र े जो ं एवं महाराष्ट्रीयन पे शवाओ ं के शासनकाल मे ं तमाशा कला ने गति ले ली थी। पु णे स्थित शनिवारवाडे क विलासी पे शवा शासको ं के रं जनार्थ शृं गारी नाचगाना एवं साहित्य सृजन सहे तू हु आ है ।

महाराष्ट्रीयन लो कनाट्य का स्वरुप :

स्वातं त्र्यो ं त्तर महाराष्ट्र मे ं लो कनाट्य के स्वरुप मे ं परिवर्तन हो ते रहे है ं । इस परिप्र े क्ष्य मे ं विशे षत: लो कनाट्य के छह प्र कार दिखाई दे ते है ं । [१]

- पे ड के नीचे सं म्पन्न हो ने वाला तमाशा

- कनाती अर्थात पं डाल मे ं सम्पन्न हो ने वाला तमाशा
- खडी गं मत तमाशा (अधिक समय खडे रहकर प्र स्तु त किया जाने वाला तमाशा)
- को कण प्र ां तिय तमाशा (आदिवासी पहाडी का तमाशा)
- तखतराव का तमाशा (बै लगाडीयो ं के उपर प्र स्तु त की जाने वाली तमाशा की झााकियॉ)
- भारुड से बना तमशा (गु रु एवं सां सारिक जीव के माध्यम से प्र स्तु त किया जाने वाला धार्मिक, सामा. तमाशा)

महाराष्ट्रीयन लो कनाट्य के आयाम:

महाराष्ट्रीयन लो कनाट्य के सामान्यत: पॉ च आयाम दे ते है । इन आयामो ं से स्वाभविक रुप से गु जरकर तमाशा आगे बढता है ।

१) गण २) मुजरा ३) गौलण ४)बतावणी ५) वग

गणेशवंदना से आरंभ हूए लोकनाट् य में स्त्री पुरुष कलाकारों द् वारा प्रेक्षकों मुजरा अर्थात आश्रयादातों के प्रति कलाकार सन्मान भाव से प्रदर्शित करते है। राधा, कृष्ण, गोपिया एवं मौसी चरित्रों द् वारा हास्यव्यंग तथा प्रेमाभिव्यक्ति होती है। बतावणी में बहानेबाजी तथा सफेद झूठ को छिपाने हेतु कलाकारों द् वारा बगलें झाकनें की कसरत होती है। वग में लोकनाट् य का प्रसिद् ध कथानक अभिनय के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

महाराष्ट्रीयन लोकनाट् य मे कलाकार :

महाराष्ट्र के लोकनाट् य में दस कलाकारों से लेकर डेढ-दो सौ कलाकार मंडली कार्यरत होती है। इसमें मुख्यतः निम्नलिखित चरित्र अपनी अदाकारी प्रस्तुत करते है।

१) सरदार (राजा) २) सोंगाड् या (विदुषक) ३) नाच्या,नाची (नर्तक-नर्तकी) ४) ढोलक्या (ढोलकिया)
५) झिलकर (सुरते अथवा सहयोगी गायक,वादक)

महाराष्ट्र कें लोकनाट् य में प्रधान चरित्र सरदार (राजा) का होने पर भी लोकनाट् य सफलता का केंद्रबिंदु सोंगाड् या अर्थात विदुषक होता है। वह जितना होनहार विनोदी एवं हाजीर जवाबी होता है लोकनाट् य उतना ही सफल होता है। लोकनाट् य के उद् गम काल में अभिनय हेतु स्त्री चरित्र न मिलनेपर पुरुष ही स्त्री-नर्तकी या अभिनेत्री की भूमिका करते थे। उन्हे ‘नाच्या’ कहते थे। पर अब तमाशा कला में स्त्रीयों का प्रवेश एवं अदाकारी उल्लेखनिय है। स्त्री नर्तकी ‘नाची’ कहलाती है। इनके अलावा एक-दो ढोलकिया तथा पॉच-छह या इससे भी अधिक संख्या में ‘सुरते’ होते है, जिन्हे सहयोगी गायक या वादक कहते है।

महाराष्ट्र के उपेक्षित समुदायों के लोकनाट् य एवं लोकनाट् यकार :

महाराष्ट्र के लोकनाट् य के उद् गम से लेकर विकास तक उपेक्षित समुदायों की अहम भूमिका रही है। यहॉ के उपेक्षित समुदायों द् वारा ही लोकनाट् य का जन्म हुआ हैं। महार एवं मांग जाति के गीत-संगीत एवं नृत्य मे ही लोकनाट् य साकार हुआ है। लोकनाट् य मंदीर की नीव, मूर्ति एवं कलश पर सर्वप्रथम महार-मांगों का ही महत्वपूर्ण अधिकार है। महाराष्ट्र के लोकनाट् य में जिन लोकनाट् यों एवं लोनाट् यकारों का योगदान विशेष - उल्लेखनिय स्थान है, वे महाराष्ट्र की सुरमा एवं कलाकार जातियॉ है। महार मांगो के साथ नृत्य का जन्मजात कौशल्य प्राप्त कोल्हाटी नर्तकियॉ, रेणुका देवी की उपासक गोंधली, बुनकर, माली, कुणबी, जैसे उपेक्षित समुदायों का योगदान भी लोकनाट् य में महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत है उनका संक्षेप में परिचय .....

लोकनाट् यकार अर्थात शाहिर भाऊ बापू मांग नारायणगॉवकर तमाशा मंडल :-

महाराष्ट्रीयन लोकनाट् य में शाहीर भाऊ मांग नारायणगॉवकर को लोकनाट् य के प्रणेता एवं पुरोधा पुरुष मानते है। शाहिर नारायणगॉवकर लोकनाट् य के वे अगुआ है, जिनके साथ और जिनके पश्चात लोकनाट् य संसार में कई पीढियॉ उनसे प्रभावित हुई। इस दृष्टीसे शाहिर भाऊ मांग नारायणगॉवकर एवं उनका नारायणगॉव लोकानाट् यों का सक्षम केंद्र सिध्द होते है। **आद्य लोकनाट् यकार**

शाहिर भाऊ मांग के अतुलनिय एवं अविस्मरणीय योगदान के कारण ही वे जनमानस के तथा भारत सरकार के राष्ट्रपति पुरस्कार गौरव के अधिकारी बने।[२] निम्न ठहराई गई मांग जाति में भाऊ तथा उनका मराठी लोकनाट् य महाराष्ट्र में शासन सम्मान का प्रथम हकदार बना। उनका नारायणगॉव 'लोकनाट् य की पंढरी' अर्थात तीर्थक्षेत्र माना जाने लगा। उनका वास्तविक नाम भाऊ खुडे था। पर उन्हे अपनी मांग जाति का अभिमान होने से वे लोकनाट् य में जाति का संबोधन लगाते। उनके साथ उनका कलाकार भतिजा बापू था। चाचा-भतिजा की इस जोडी ने ' भाऊ-बापु तमाशा मंडल' का नाम महाराष्ट्र के कोने कोने तक पहुँचाया। भाऊ स्वयं अच्छे गायक एवं रनचाकार थे। उनके पूर्ववर्ति लोकनाट् यकार पठ् ठे बापुराव कुलकर्णी को वे अपना गुरु मानते। पुणे जिले के जुन्नर तहसिल के नारायणगॉव में प्रथम लोकनाट् य भाऊ द् वारा शुरु हुआ। उनके लोकनाट् य में चाचा भतिजे के साथ पत्नी विठाबाई, पॉच बच्चे शामिल थे, जिन्होने आगे चलकर अपने स्वतंत्र लोकनाट् य चलाएँ।

सातु हीरु कवलापूरकर तमाशा मंडल :-

महाराष्ट्र के कवलापुर में जन्मे हीरु का लोकनाट् य मंडल प्रसिद् ध लोकनाट् यों में से एक रहा है। ये दो सगे भाई थे। सातु गायन में और हीरु वादन में प्रविण थे। सामाजिक एवं धार्मिक विषयों को केंद्र में रखकर दोनों ने अविस्मरणिय लोकनाट् यों की निर्मिती की।

शिवा सम्भा खाडे कवलापुरकर का लोकनाट् य मंडल :-

महाराष्ट्र के सांगली जिले के कवलापुर गॉव में जन्मे शिवा-सम्भा सगे भाई थे। सातु हीरु कवलापुरकर शिवा सम्भा के पिता थे। अपने लोकनाट् य में शिवा सोंगाड् या अर्थात विदुषक की भूमिका करते और सम्भा सरदार का अभिनय करते। डॉ. अम्बेडकर जी से उन्होने प्रत्यक्ष प्रशंशा और प्रेरणा पाई थी। इनकी मंडली में गणपत याळाविकर, तात्या बामणीकर ढोलकिया तथा साधू कवडीकर जैसे गायक मंडली थी।

दगडू खंडू शिवणेकर लोकनाट् य तमाशा मंडल :-

महाराष्ट्र के शिवणे गॉव में जन्मे खंडू शिवणेकर लोकनाट् य क्षेत्र में महत्वपुर्ण नाम हैं। दोनो सगे भाई थे। खंडू गायक था। दगडू सोंगाड् या अर्थात विदुषक था। इनके पश्चात इनके बेटे शंकर शिवणेकर ने लोकनाट् य परम्परा की बागडोर संभाली।

वग अर्थात नाट् यसम्राट शिवराम बोरगॉवकर लोकनाट् य तमाशा मंडलः-

महाराष्ट्र-कर्नाटक के सीमावर्ति प्रदेश बोरगॉव में जन्मे शिवराम उपेक्षित महार जाति के कलाकार थे। मराठी लोकनाट् य क्षेत्र पर पचास वर्षो से भी अधिक उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का प्रभाव रहा है। उन्होने सन १९४८ में दिलबहार हार्मोनियम में खुद के लोकनाट् य की स्थापना की। परम्परागत लोकनाट् य को आधुनिकता का स्पर्श देकर उन्होंने नूतन लोकनाट् य की अभिव्यक्ति की। वे स्वयं गाते और निवेदन के साथ अभिनय भी करते। उनकी नाटकीय भावभिव्यक्ति के कारण ही उन्हे 'वग सम्राट' यही उपाधि प्रदान की गई। आज शिवराम बोरगॉकर के चारो पुत्र लोकनाट् य की पताका कलाक्षेत्र में फहरा रहे हैं।

साहित्य सम्राट तथा लोकशाहिर अण्णाभाऊ साठे :

'अण्णाभाऊ' साहित्य जगत के **मील के पत्थरों में से एक** है। वे भारतीय रंगमंच एवं लोकनाट् य के लिए एक आधार स्तम्भ है। मांग जनजाति में जन्मे अण्णाभाऊ की साहित्य सम्पदा भरपूर है। साहित्य की सभी विधाओं में उन्होंने अपनी कलम चलाई है। आत्मा की निर्मल, सुंदर एवं यथार्थ पुकार उनके साहित्य का प्राणतत्व है। फुले, अम्बेडकर तथा मार्क्स के विचारों से प्रभावित अण्णाभाऊ ने लोकनाट् य के क्षेत्र में भी अपनी अमिट छाप छोडी है। उनकी अधिकतर कथाओं एवं उपन्यासों में लोकनाट् य संसार उभारा हुआ है। उन्होने एक दर्जन से भी अधिक वर्ग अर्थात लोकनाट् यों का लेखन किया है। उन्होंने परम्परागत लोकनाट् यों में निहित विकृतियों को तिलांजली देकर, नये तत्वों की अवधारणा की। अण्णाभाऊ के योगदान के संदर्भ में प्रसिध्द विदुषि डॉ. तारा भवालकर ने लिखा हैं, ''परंपरागत तमाशा का गण (वंदन) अंधश्रध्दाओं को पुष्ठि देनेवाला था तथा ग्वालनों का प्रवेश नारी प्रतिमा को विकृत करनेवाला था। इसलिए

अण्णाभाऊने दोनों को ठुकराकर, गण के स्थान पर मातृभूमि, वीर हुतात्माएँ तथा राष्ट्र पुरुषों का नमन किया। अश्लिलता के दलदल में फँसी लोकनाट्‌ य कला को नया रुप एवं नई वैचारिक दृष्टी देने का कार्य अण्णाभाऊने किया।''[३]

तुकाराम खेडकर लोकनाट्‌ य तमाशा मंडल :-

महराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के खेडगॉव में जन्में तुकाराम खेडकर महाराष्ट्रीयन तमाशगिरों के प्रेरणास्थान बने हुए हैं। तुकाराम खेडकर उन अग्रणियों में से एक हैं जिन्होने लोकनाट्‌ य कला को जनसमाज में उँचाई प्रदान कराई तथा जो आजीवन समर्पित भाव से कार्य करते रहे। तुकाराम खेडकर ने अपनी कलावति पत्नी कांताबाई सातारकर के संग लोकनाट्‌ य तमाशा मंडल की स्थापना की, जिसके आजीवन कला प्रयोग होते रहे। तुकाराम खेडकर एवं कांताबाई सातारकर उन लोकप्रिय कलाकार युग्मों में से एक ठहरे, जिनके नाम से ही उनके लोकनाट्‌ य को देखने अपार भीड उमडती ? इनकी संतान ने भी लोकनाट्‌ य कला में स्वयं को झोंक दिया है।

चंद्रकांत ढवळपुरीकर लोकनाट्‌ य तमाशा मंडल :-

रेणुका माता की उपासना करनेवाली उपेक्षित 'गोंधली' समुदाय में जन्मे चंद्रकांत अपने अनोखे कलाविष्कार से लोकनाट्‌ य क्षेत्र पर छाये हुए हैं। सन १९६४ से आजतक वे निरंतर लोकनाट्‌ य से जुडे हैं, मंच पर कुशल खलनायक चरित्र के रुप में चंद्रकांत ढवलपुरीकर जाने जाते है। उनके सभी लोकनाट्‌ यों में एक खुख्वॉर खलनायक उनके माध्यम से समाया हुआ है। अब लोकनाट्‌ य की बागडोर इनकी संताने संभालती हैं।

भीका भीमा सांगवीकर लोकनाट्‌ य तमाशा मंडल :-

महाराष्ट्र स्थित खान्देश के शिरपुर का प्रसिध्द लोकनाट्‌ य भीका भीमा तमाशा रहा है। वे दोनो एक ही परिवार के सदस्य थे। भारतीय स्वतंत्रता के स्वर्ण जयंतिपर आधिरित 'का पुसले कुंकु ?' अर्थात 'क्यों मिटाया सिंदुर' उनकी बहुचर्चित नाट्‌ यकृति रही है। महाराष्ट्र की आम जनता इनके लोकनाट्‌ य पर उमड पडती हैं। एक सफल लोकनाट्‌ य एवं लोकनाट्‌ यकार के रुप में भिका-भीमा तमाशा मंडल महाराष्ट्र में प्रसिद्‌ ध रहा है।

हास्य-विनोद के बादशहा कालु-बालु की गंमत :-

महाराष्ट्र में जिनके हास्य विनोद की अनुभूतियॉ लेने हेतु दर्शकों की अपार भीड उमडती वे लोकनाट्‌ य के कलाकार कालु-बालु 'शीवा सम्भा कवलापुर लोकनाट्‌ य के पारिवारिक एवं सहयोगी सदस्य थे। आद्य लोकनाट्‌ यकार सातु-हीरु कौलापुरकर के ये दोनो पोते हैं। सन १९४८ के पुना महोत्सव में सम्पन्न 'लोकनाट्‌ य तमाशा महोत्सव' में इन दोनो ने 'जहरी प्याला' कलाकृति में कालु-बालु हवालदारों की भूमिका की थी। वह इतनी प्रशंसित एवं संस्मरणीय रही की उसके बाद 'लहू-अंकुश' इन जुडवॉ भाईंयो का नामकरण 'कालु-बालु' हो गया।

आनंद लोकनाट्‌ य तमाशा मंडल :-

खान्देश के जलगॉव जिले का प्रसिध्द लोकनाट्‌ आनंदराव महाजन का आनंद लोकनाट्‌ य रहा है। आनंदराव महाजन माली समाज में जन्मे प्रतिभाशाली कलाकार रहे है। इनके द्‌ वारा अभिनित तथा दिग्दर्शित लोकनाट्‌ यों नें लोगों की अभिरुचियों में वृद्‌ ध की। उनके विशेषतः सामाजिक लोकनाट्‌ यों ने महाराष्ट्र की जनता पर जादू कर दिया।

रामचंद्र बनसोडे लोकनाट्‌ य तमाशा मंडलः-

लोकनाट्‌ य के स्त्रोतपुरुष भाऊ मांग नारायणगॉव के दामाद के रुप में रामचंद्र बनसोडे प्रसिध्द्‌ है। वे 'आधुनिक वगकार' के रुप में ख्यातिप्राप्त है। आधुनिक वग अर्थात लोकनाट्‌ यों का लेखन एवं उनकी प्रस्तुति में रामचंद्र बनसोडे विशेष माहिर हैं। इनके सामाजिक विषयों पर आधारित लोकनाट्‌ य दर्शको को अंतर्मुख कराते हैं। सन १९८५ से लोकनाट्‌ य के द्‌ वारा ये दर्शको का मनोरंजन कर रहे हैं। इनकी संतान भी लोकनाट्‌ य में पदार्पण कर, महाराष्ट्र की सेवा में जुटी हैं।

लावणीकार 'भाऊ फक्कड' की तमाशा को देन :-

दुर्लक्षित बहुजन समाज में जन्मे भाऊ फक्कड मस्त मिजाज के कलाप्रेमी जीव थे। उनकी शृंगार प्रधान लावणियॉ अधिकतर लयदार, चित्ताकर्षक एवं झटकेदार होती है। कोई भी सह् दय इनकी रचानाओं में झुमकर, तबीयत से फडक उठता। इन्ही साहित्यीक विशेषताओं के कारण भाऊ 'फक्कड' कहलाए। भाऊ की अनेक लावणियॉ नानाविध लोकनाट् यों को शृंगारिक करती रही। सन १८६० से १६२० की कालावधी में भाऊ लावणी गीतों के द् वरा लोकनाट् य के दर्शकों के दिलो दिमाग पर छाये रहें। सन १६४१ में **डॉ. बाबासाहब अम्बेडकरजी के आदेश**४ पर भाऊ ने जलसा स्वरुप लोकनाट् य का निर्माण भी किया था।

महाराष्ट्र में अपार लोकप्रिय धोंड्या-कोंड्या की गंमत :-

महाराष्ट्र में धोंडु-कोंडु पाटील को खान्देशी तमाशा के सरताज माना जाता हैं। जलगॉव जिले के भडगॉव तहसिल में बहुजन समाज में जन्में धोंडु कोंडु पाटील भाई भाई थे। इन्होंने स्वतंत्र लोकनाट् य की स्थापना की जिसका नाम था 'श्री मल्हार प्रासादिक मंडली धोंडु कोंडु पाटील, शिदीकर लोकनाट् य' स्वाधिनतापूर्व कालावधी में **ब्रिटीश के विरोध में पवॉडा** गाने से उन्हे कारावास की सजा हुई थी। लोकनाट् य में धोंडु सरदार की और कोंडु विदुषक की ऐसी भूमिका निभाते की दर्शक हॅसते हॅसते लोटपोट हो जाते।५

दादु इंदुरीकर लोकनाट् य तमाशा मंडल :-

पुना शहर के निकवर्ति इंदुरी गॉव में कलाकार दादु का महार जाति में जन्म हुआ। अपने कलाकार पिता के असामायिक निधन पर दादु को बचपन में ही गले में ढोलकी लटकानी पडी। सन १६५५ में दादु ने खुद के लोकनाट् य मंडल की स्थापना की । प्रसिध्द् नाट् य 'गाढवाचं लग्न' अर्थात 'गधे का ब्याह' की भूमिका उनकी विशेष सराहनिय रही हैं। गीत, संगती, अभिनय, एवं दिग्दर्शन की महान क्षमता दादु के पास थी। इसी कारण वे 'तमाशा रंगभूमी के महानायक' सिध्द होते हैं।

दगडूबा तथा दत्तोबा लांबे लोकनाट् य तमाशा मंडल :-

साळी अर्थात बुनकर समाज में जन्मे दगडू बाबा साळी एवं उनका पुत्र दत्तोबा भूमि के असाधारण कलाकार हैं। पैठण गॉव में जन्में दगडू एवं दत्तोबा तांबे अपने गीत, संगीत तथा अभिनय से लोकनाट् य क्षेत्र में स्मरण किये जाते हैं। दत्तोबा ने पठ् ठे बापुराव शिवा सम्भा, भाऊ फक्कड, शिवा तासगॉवकर जैसे महान रचनाकारों के साथ कार्य किया हैं। ताम्बे परिवार की अनेक रचनाऍ आज भी अनेक लोकनाट् य में से सुनाई देती हैं।

इन ख्यातिप्राप्त एवं समर्पित लोकनाट् य के हस्ताक्षरों के अलावा कोचुरे, वगसम्राट बाबुराव बोरगॉवकर, विनोदवीर रघुवीर खेडकर जैसे अनेक उपेक्षित समुदायों के कलाकारों के लोकमान्य लोकनाट् य महाराष्ट्र की जनसेवा में भक्तिभाव से सलंग्न है। बाबुराव जैसे नवयुवक तो स्नातक उपाधि प्राप्त करने पर भी लोकनाट् य क्षेत्र समप्रित भाव से सक्रिय है। लोकनाट् य के क्षेत्र में अनुवंशिक परम्परा का भी मौलिक योगदान रहा है।

महाराष्ट्र के उपेक्षित समुदायों के लोकनाट् य की प्रधान स्त्री अदाकरा :-

लोकनाट् य के उद् गम काल में महाराष्ट्र के लोकनाट् यों या तमाशाओं में स्त्रीयॉ काम नही करती थी। स्त्री का तमाशाओं में भूमिका करना तत्कालिन सामाजिक धार्मि मान्यताओं के विरुद् ध था। लोकनाट् य को मिलता राजाश्रय, जनाश्रय एवं सामाजिक सुधारों से प्रभावित हो निम्न वर्ग की स्त्रीयॉ तमाशाओं की ओर उन्मुख हुई। तमाशा में काम करनेवाली स्त्री को 'नाची' कहा जाता हैं। जिस तमाशा में प्रत्यक्ष स्त्री अदाकारा होती है उसे उस तामाशा को देखने अपार भीड उमड़ती हैं। फलतः महार, मांग, माली, बनुकर, गोंधली, कोल्हाटी, कुणबी मुरली जैसे उपेक्षित समुदायों के लाकनाट् य में स्त्री अदाकारों का प्रवेश हुआ। अनेक लोकनाट् यकारों ने अपनी पत्नी, प्रेमिका, साथी एवं रिश्तेदार स्त्री चरित्रों को लोकनाट् य के मंच पर प्रस्तुत किया। महार, मांग एवं कोल्हाटी समुदायों की स्त्रीयो का इसमें विशेष योगदान है। इन में से कुछ स्त्रीयों ने अपने लोकनाट् यकार प्रति के निधनों परांत लोकनाट् य मडंल की

बागडोर स्वयं संभाली हैं। प्रस्तुत है, उपेक्षित समुदायों की कुछ उल्लेखनिय स्त्राी अदाकारों का संक्षेप मे परिचय –

रुपसम्राज्ञी पवला :–

लोकनाट् य इतिहास में एक **रुपवान एवं कला संपन्न** नारी के रुप में 'पवला' प्रसिद् ध हैं। संगमनेर जिले के अहमदनगर तहसिल में १८८१ में महार जाति में पवळा का जन्म हुआ । मॉ बाप के द् वारा लोकदेव खंडोबा की आजीवन उपासना हेतू पवला को 'मुरली' के रुप में अर्पित किया गया। **ब्राम्हण लोकनाट् यकार पठ् ठेबापुराव और महार अदाकरा 'पवला'** ने इतिहास रचाया। लोकनाट् यइतिहास में सर्वाधिक चर्चित प्रसिध्द एवं आद्य कलाकार प्रेमीयुग्म के रुप में महाराष्ट्र के रसिक इन्हें जानते है। पवळा के संदर्भ में विशेष उल्लेखनिय संदर्भ है जिससे आज की माधुरी दीक्षित एवं ऐश्वर्या जैसी अभिनेत्रियों की लोकप्रियता भी तत्कालीन समय के पवला की लोकप्रियता के आगे फीकी पडती हैं। लोकनाट् य के मालिक सौंदर्यवती पवळा को महाराष्ट्रीयन जरी पैठणी साडी में, जरी किनारवली कंचुली पहनाकर, पैरो में शिंदेशाही तोडे(अंलकार) पहनाकर कुंतले खुले कर तथा सर्वांग पर अलंकार परिधान कर पठ् ठे बापुराव के साथ 'अबुशेठ बाग' में बिठाते और दो आने टिकट पर प्रेक्षकों से खुब पैसा कमाते। लोग केवल उन्हे देखने ही टुट पडते।६

तमाशा सम्राज्ञी विठाबाई भाऊ मांग नारायणगॉव कर :–

प्रसिध्द लोकनाट् यकार एवं लोकनाट् य के **स्त्रोत पुरुष भाऊ मांग नारायणगॉवकर** की पत्नी के रुप में विठाबाई परिचित है। विठाबाई ने पति की ताल में ताल मिलाकर लोकनाटक मंच को सुरिला बनाया। गायिका नर्तकी एवं अभिनेत्री के रुप मं विठाबाई पति के साथ और पति के निधनोपरांत भी कार्य करती रही। पति के स्वर्ग सिधारने पर विठाबाई ने लोकनाट् य तमाशा मंडल की बागडोर पचास वर्षो से भी अधिक समय तक बडी सखमता से संभाली अदाकरिता एवं संघटन कोशल के कारण विठाबाई को **तमाशा सम्राज्ञी** कहते है। नशिली आवाज की जादुगरनी, मदहोश नृत्य अदाकारा एवं संवेदनशिल अभिनेत्री के रुप में विठाबाई कार्यरत रही हैं। लोकनाट् य में हिंदी – मराठी गीतों की शानदार प्रस्तुति विठाबाई की विशेषता रही। विठाबाई ने लोकनाट् य मंच से **लोकरंजन के साथ लोकशिक्षण** का भी कार्य किया। **सन१८६२ में भारत चीन युध्द्** के दरम्यान भारतीय सैनिकों का मनोरंजन करने के लिए तथा उनका मनोबल बढाने हेतु, सरहद पर विठाबाई और उनके लोकनाट् य मंडल ने कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

विठाबाई ने मदहोश छोटा जवान, सांगते ऐका (कहती हूँ ! सुनो !) जैसे **मराठी हिंदी फिल्मों में अभिनय भी** किया। विठाबाई की कलाक्षेत्र की उपलब्धियों के कारण उन्हे शासन का 'राष्ट्रपति पदक सम्मान' प्राप्त हुआ। आज विठाबाई की तिसरी पीढि लोकनाट् य क्षेत्र में कार्यरत है।७

अदाकारा कांताबाई सातारकर :–

महाराष्ट्र में लोकनाट् यकार तुकाराम खेडकर तमासगिरों के प्रेरणास्थान रहें है। **लावणी सम्राज्ञी कांताबाई** सातारकर, तुकाराम खेडकर की अर्धांगीणी हैं। महाराष्ट्र के सातारा तहसिल में जन्मी कांताबाई अपने जीवन का अधिकांश समय लोकनाट् य में बिताया। **तुकाराम खेडकर एवं कांताबाई सातारकर लोकनाट् य** का प्रसिध्द युग्म रहा है। इस पति–पत्नि की अदाकारा जोडी ने अधिकांश समय तक लोकनाट् य रसिकों के हृ दय पर राज किया हैं। कांताबाई के नृत्य एवं गीत विशेष उल्लेखनिय रहे हैं।

अदाकारा आक्का कराडकर :–

महाराष्ट्र के कराड में कोल्हाटी जनजाति में जन्मी अक्काबाई कराडकर सन १६६४ से लोकनाट् य कला के द् वारा दर्शकों की सेवा में संलग्न हैं। मूलतः नर्तक परिवार में जन्म लेने से, अक्कताई के नृत्य विशेष विलोभनिय रहे हैं। सामाजिक नाट् यों मे अक्कताई नाट् यों मे अक्कताई का अभिनय सराहनिय

रहा हैं।

अदाकारा मंगला बनसोडे :-

लोकनाट् य के स्त्रोतपुरुष भाऊ मांग नारायणगॉवकर एवं विठाबाई **भाऊ नारायणगॉवकर की सुपुत्री** के रुप में अदाकारा मंगला बनसोडे प्रसिध्द् हैं। पति रामंचद्र बनसोडे एवं मंगला बनसोडे की जोडी आधुनिक लोकनाट् य के क्षेत्र में उल्लेखनिय है। मंगला बनसोडे **प्रसिद् ध नृत्यांगना** हैं। ढोलकी की लयपर और शब्दों के बोल पर मंगला अपने कलाविष्कार से दर्शको मंत्रमुग्ध कर देती हैं।

नटरंगी नार अर्थात 'लीवनी सम्राज्ञी' सुरेखा पुणेकर :-

अहमदनगर जिले के श्री गोंदा गॉव मे जन्मे सुरेखा ने आरंभ में अपने परिवार में प्रचलित लोकनाट् य की परम्परा निभाई। सुरेखा के पिताजी कोंडीबा टाकलीकर एवं मॉ तमाशा में कार्यरत थे। सन १९८५ से १९९० तक **सुरेखा पुणेकर लोकनाट् य तमाशा मंडल** की बागड़ोर सुरेखा ने संभाली। किंतु लावणी एवं नृत्य में विशेष लगाव होने से तथा दर्शकों द् वारा भी आग्रह होने से स्वतंत्र लावणी-नृत्य का कार्यक्रम शुरु किया। सन २००० से 'नटरंगी नार, उडवी लावणीचा बार' अर्थात **'नटरंगी नार, उडाए लावणी के बार'** इस कार्यक्रम से सुरेखा पुणेकर को खुब प्रसिध्द एवं सफलता मिली। महाराष्ट्र के बाहर भी 'नटरंगी नार के कार्यक्रम होते रहे। सुरेखा की अदाकरिता, उचित पदन्यास, गीत संगिता नुसार भाविष्कार एवं प्रेक्षकों की अभिरुचि नुसार कार्यक्रम प्रस्तुति से सुरेखा पुणेकर आज के समय की लावणी सम्राज्ञी हैं। लता पुणेकर सुरेखा की बहन हैं, जिसका लता पुणेकर लोकनाट् य तमाशा मंडल आज महाराष्ट्र मे प्रसिध्द हैं।

उपेक्षित समुदायों के लोकनाट् य में वग अर्थात कथा नाट् य :

महाराष्ट्र के लोकनाट् य में पाच आयाम होते हैं। इनमें लोकनाट् य का वग लोगो की जिज्ञासा एवं अभिरुचि का केंद्र होता हैं। जिन लोकनाट् यो में मोहिनी नृत्यांगनाओं के साथ चित्ताकर्षक वग अर्थात कथानाट् य होता है, उन लोकनाट् यो को देखने दर्शकों की अपार भीड उमडती हैं। उपेक्षित समुदायों के लोकनाट् यो ने दर्शकों की अभिरुचि को पहचानकर तथा सामाजिक स्थित्यंतरो को सन्मुख रख, अनेकानेक मार्मिक वग प्रस्तुत किए हैं। इनमें धार्मिक, सामाजिक, काल्पनिक विषयों के साथ सत्य घटनाओं की भी कलात्मक अभिव्यक्ति हुई हैं। इन वगों ने नाट् यदर्शकों के मनोंरंजन के साथ उद् बोधन करने का भी कार्य किया है। प्रस्तुत है इनमें से कुछ वगों का संक्षेप में परिचय -

पठ् ठे बापुराव लिखित एवं पवळा अभिनित लोकनाट् य का प्रसिध्द वग - 'मिठ् ठा रानी'

भाऊ बापू मांग नारायणगॉवकर लोकनाट् य के प्रसिध्द वग :-[८]

१) रायगढ की रानी २) सत्यवान सावित्री ३) संत गोरा कुम्हार
४) शिवप्रताप ५) मेवाड का मछुआरा ६) रानी ने बाजी जीत ली
७) चंद्र मोहना ८) गढ़ आया, पर शेर गया

विठाबाई बापू मांग नारायणगॉवकर लोकनाट् य के प्रसिध्द वग :- 'मुबई की केले वाली'

प्रथम वगलेखक उमा-बापु का प्रसिध्द् वग :- 'मोहना बटाव'

आधुनिक लोकनाट् य के जनक अण्णाभाऊ साठे के प्रसिध्द् वग :-[९]

१) अक्ल की कहानी २) बिलंदर बुडवे (डूबोनेवाले अवलिए) ३) गैर कानुनी
४) नेता मिल गया ५) मेरी मुंबई ६) देशभक्त घोटाले (अपहार)
७) चुनाव के घोटाले ८) लोकमान्यों का दौरा(सैर) ९) पेंग्या की शादी

आधुनिक वग सम्राट बाबुराव बोरगॉवकर के वग :-

१) कानुन के द् वा पर तोडा सुहाग का चुडा २) रायगड की रानी
३) क्यों....मनुष्य हुआ सैतान? ४) पॉच तोफों की सलामी
५) बेरडं जाति की औलाद। ६) क्रांमिसिंह नाना पाटील

वग सम्राट चंद्रकांत ढवलपुरीकर के प्रसिध्द वग :-

१) संत तुकाराम २) महाराष्ट्र झुकता नही (इराण में प्रदर्शन) ३)खून की खून को फॉसी
४) क्या दिया स्वंतंत्रता ने? ५) बाप ही बना आतंकवादी ६) बंद करो ! यह गैंगवार
७) ज्ञानेश्वर मेरी माता ८) भक्त पुंडलिक

लोकनाट्‌ यकार भीका भीमा सांगवीकर के प्रसिध्द वग :-

१) डाकु संग्रामसिंह २) पागल हुआ तेरे लिए ३) संघर्ष भडक उठा पाप का
४) क्यों मीटाया सिंदुर ?

अदाकारा अक्काताई कराडकर के प्रसिध्द वग :-

१) अतिरेक हुआ बेबंदशाही का २) इंदिरा ! जन्म लो दुबारा
३) शादी के पहले सिंदुर मीटा ४) दिवाली

लोकनाट्‌ यकार शिवासम्भा खाडे कवलपापुरकर के वग :-

१) राजा हरिश्चंद्र तारामति २) विक्रम शशिकला
३) इश्क पखेरुँ ४) सत्यवान सावित्री
५) व्यंकटराव मास्टर

लोकनाट्‌ यकार दादु इंदुरीकर का प्रसिद्‌ ध वग :- 'गधे की शादी'

लोकनाट्‌ य सम्राट तुकाराम खेडकर का प्रसिद्‌ ध वग :- 'मुंबई की गोल्डन गैंग'

अदाकारा कांताबाई सातारकर के प्रसिद्‌ ध वग :-

१) कानुन के द्‌ वार पर तोडा सुहाग का चुड़ा २) रायगड की रानी
३) क्यो... मनुष्य हुआ सैतान? ४) पॉच तोफों की सलामी
५) बेरडं जाति की औलाद ६) क्रांतिसिंह नाना पाटील

लोकनाट्‌ यकार सातु हीरु कोलापुरकर के प्रसिद्‌ ध वग :-

१) म्हैदया का अर्थात लुटेरे का वग २) जिंदा भूत
३) चोरों का बाजार

गीतकार भाऊ फक्कड का प्रसिद्‌ ध वग (जलसा) :- 'बैंगन का भूत'

आनंद लोकनाट्‌ य मंडल के प्रसिद्‌ ध वग :-

१) भ्रष्ठ किया गया वह गणतंत्र २) गॉव वैसे अच्छा, पर नेताओं ने घेरा

आधुनिक वगकार रामचंद्र बनासेडे के प्रसिद्‌ ध वग :-

१) बापु बीरु वाटेगॉवकर २) विष्णु बाला पाटील ३)कृष्णा तट का फरारी
४) भक्त प्रल्हाद

वग सम्राट शिवराम बोरगॉवकर के प्रसिद्‌ ध वग :-

१) मॉ का कलेजा (साने गुरुजी लिखित रचना 'श्याम की मॉ' पर आधारित)
२) रानी रुपवती ३) रक्त से सॅजा केशरी झंडा

४) बाई (स्त्री) किसकी? घाई (जल्दबाजी) किसकी? ५) मुंबई का मवाली
६) रक्त का तिलक ७) मराठों की सुशिला ८) दत्तक (गोद लिया) पूत्र

लोकनाट् यकार सातु हीरु के प्रसिध्द वग :-
१) म्हैदया का अर्थात लुटेरे का वग २) जिंदा भूत ३) चोरों का बाजार

गीतकार भाऊ फक्कड के प्रसिध्द वग (जलसा) :- 'बैंगन का भूत'
आधुनिक वगकार रामचंद्र बनसोडे के प्रसिध्द वग :-
१) बापु बीरु वाटेगॉवकर २) विष्णु बाला पाटील
३) कृष्णा तट का फरारी ४) भक्त प्रल्हाद
वग सम्राट शिवराम बोरगॉवकर के प्रसिध्द वग :-
१) मॉं का कलेजा (साने गुरुजी लिखित रचना 'शाम की मॉं') २) रानी रुपवति
३) रक्त से सजा केशरी झंडा ४) बाई (स्त्री)किसकी ? घाई (जल्दबाजी) किसकी?
५) मुंबई का मवाली ६) रक्त का तिलक ७) मराठों की सुशिला
८) दत्तक (गोद लिया) पूत्र।

सत्यशोधकी एवं अम्बेडकरीवादि जलसे :

महाराष्ट्र में परम्परागत लोकनाट् यों से हटकर उन्नीसवी सदि के आरंभ से महात्मा ज्योतिबा फुले तथा डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी के विचारों पर आधारित सत्यशोधकी जलसों का दौर शुरू हुआ। जलसे मूलतः समाज प्रबोधन हेतु खेले जाते, मनोरंजन उनका गौण उद् येश्य था। तत्कालिन समाज का पाखंड हास्यव्यंग्य के द् वारा लोगों के सन्मुख लाकर, सत्याभिव्यक्ति करना जलसों का केंद्रीय विचार था। फलतः जलसों में घोर शृंगारिकता एवं अश्लिलता के स्थान पर सतकर्म एवं सत् धम्म विषयक विचारों को स्थान था। विशेषतः महार, मांग, माली जैसे उपेक्षित समुदायों के कलाकार जलसा कें केंद्र में होते। 'एक शोध के आधार पर तत्कालिन महाराष्ट्र में तीस जलसे समाज प्रबोधन हेतु कार्यरत थे । ... भीमराव महामुनी आद् य जलसाकार थे । तथा किसन फागुजी बनसोडे, रामचंद्र नरहर माली, रसुल पिंजारी, जलसाकार आहेर, केरूबुबा, वामनदादा करडक, अडांगळे, विट् ठल उमप, सोनवणे जैसे जलसाकारों का जलसे विशेष चर्चित थे।[१०]

इन जलसों में महारकी मातृविलाप, वतनदारी, सामाजिक आंदोलन, धर्मांतर, दलितों का वाली, भीमजयंती, मनुस्मृति, पूणे करार, जैसे जलसे तत्कालिन श्रोताओं में विशेष प्रभावशाली रहे। इन जलसों में देव देवाताओं के तथा कोरी कल्पनाओं के स्थान पर युगप्रवर्तक डॉ. अम्बेडकर एवं महात्मा फुले प्रेरक व्यक्तित्व-कृतित्व प्रस्तुत किया है।

आज जलसों एवं लोकनाट् यों का प्रचलन समय के साथ कम होता जा रहा है। जलसों का प्रचलन आज नही के बराबर है। लोकनाट् य के क्षेत्र में व्यावसायिकता का अत्यधिक प्रवेश होने से इनका स्वरूप आज परिवर्तित हो गया है। फिर भी लोकनाट् यों, तथा तमाशपटों कें प्रति आज भी जिज्ञासा एवं लोकआकर्षण पाया जाता है।

महाराष्ट्र के उपेक्षित समुदायों के लोकनाट् य : निष्कर्ष :

१) महाराष्ट्र में लोकनाट् य का आरंभ सत्रहॅवी शति में हुआ है। मुगल फौजों, पेशवा शासकों तथा शिवाजी राजा के रयत के मनोरंजन में इसके प्रमाण प्राप्त होते है।

२) देश एवं महाराष्ट्र में सर्वप्रथम मुगल सिपाहियों के मनोरंजन हेतु ही लोकनाट् य कला का आंशिक मात्रा में उद् य हुआ है।

३) लोकनाट् य के उद् गम काल से लेकर विकासकाल तक उसकी समुचि बागडोर उपेक्षित संवर्गो ने संभाली हैं। महार, मांग, कोल्हाटी,बुनकर, गोंधली, कुणबी, साळी जैसे उपेक्षित किंतु कलाकार समुदाय एवं उनका योगदान इसका प्रमाण हैं।

४) लोकनाट् य के उद् भव काल में स्त्री चरित्र की भूमिका 'नाच्या' करता था। वह स्त्री वेष में पुरुष होता था। तत्कालिन सामाजिक धारणानुसार उँची जाति के सदस्यों तथा स्त्रींयों का काम करना हीन माना जाता।

५) 'सोंगाड् या' अर्थात विदुषक लोकनाट् य का केंद्रिय चरित्र होता है। आज भी उसकी अदाकारियों पर ही अधिकतर लोकनाट् य लोकप्रिय होते हैं।

६) लोकनाट् य लोकरुचि एवं लोकभावना अभिव्यक्ति हैं। इसके लिए विशेष प्रावधानों की अवश्यकता नही होती। पेड के नीचे, मंदीर चबुतरे पर, खेतों में या बैल गाडी पर भी लोकनाट् यविष्कार होता हैं।

७) लोकनाट् य अतित की धरोहर एवं वर्तमान की उपलब्धियोंपर आधारित होता हैं। लोकनाट् य के विविध आयाम एवं कथ्थ्याभिनय इसके प्रमाण हैं।

८) लोकनाट् य इस प्रधान उद् देश्य के साथ लोकउद् बोधन भी लोकनाट् य के माध्यम से संपन्न होता हैं। महाराष्ट्र में आद्य लोकनाट् यकार पठ् ठे बापुराव से आधुनिक लोकनाट् यकार बाबुराव बोरगॉं तक के लोकनाट् य इसके साक्षी हैं।

९) परम्परागत लोकनाट् य में जो घोर शृंगारिकता एवं कहीं कहीं प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष अश्लिलता पाई जाती हैं उसका एकमात्र कारण लोकाभिरुचि एवं आश्रयदाताओं की दृष्टि है।

१०) महाराष्ट्र में परम्परागत लोनाट् यों से हटकर उन्नसवी शति के आरंभ से महात्मा फुले एवं डॉ. अम्बेडकरजी के विचारों पर आधारित सत्य शोधकी तथा अम्बेडकरवादि जलसों का निर्माण होता रहा, जो मुलतः समाज प्रबोधनपर आधारित थे।

११) परम्परागत लोकनाट् य के अधिकतर कलाकार उनके आश्रयदाताओं की कठपुतलियॉं होते हैं, जिनकी लम्बे समय तक उपेक्षा एवं शोषण होता ैं। महाराष्ट्र के अनेक लोकनाट् य कलाकारों की हुई दुर्दशा इसके गवाह हैं।

१ पृष्ठ संख्या १ - तमाशा एक रांगडी गंमत - श्री. संदेश भंडारे

२ पृष्ठ संख्या १६ - तमाशा कला आणि कलावंत - श्री. डॉ. मिलींद कसबे

३ पृष्ठ संख्या १२ - तमाशा कला आणि कलावंत - श्री. डॉ. मिलींद कसबे

४,५ पृष्ठ संख्या १८४,१८५ - तमाशा लोकरंगभूमी - श्री. डॉ. रुस्तम अचलखॉब

६,७ पृष्ठ संख्या १७ - तमाशा कला आणि कलावंत - श्री. डॉ. मिलींद कसबे

८,९ पृष्ठ संख्या १३ - तमाशा कला आणि कलावंत - श्री. डॉ. मिलींद कसबे

१० पृष्ठ संख्या ४६,४७ - आंबेडकरी जलसे - श्री. डॉ. भगवान ठाकुर

संदर्भ :-

अ) सहायक ग्रंथ

१) तमाशा : एक रांगडी गंमत (मराठी) - संदेश भंडारे, लोकवाङ्मय गृह, मुंबई (वर्ष २००६)

२) तमाशा : कला आणि कलावंत (मराठी) - डॉ. मिलिंद कसबे, सुगावा प्रकाशन, पुणे (वर्ष २००७)

३) तमाशा : लोकरंगभूमि (मराठी) - डॉ. रुस्तम अचलखांब, सुगावा प्रकाशन, पुणे (वर्ष २००६)

४) आंबेडकरी जलसे : डॉ. भगवान ठाकुर, सुगावा प्रकाशन, पुणे (वर्ष २००५)

ब) साक्षात्कार/स्त्रोत व्यक्ति :

१) श्री. राजधर सोनवणे, जनपद बोरगांव, धरणगॉव तहसिल

२) श्री. विक्रम सदाशिव, जनपद अट्रावल, यावल तहसिल
३) श्री. गुलाबराव, जनपद ममुराबाद, जलगॉंव तलसिल
४) सौ. हीराबाई, जनपद नगरदेवळा, पाचोरा तहसिल

डॉ. शशिकांत सोनवणे ‘सावन’
drshashikant.sonawane@gmail.com

Mob. 09423186115